Quadrant II – Notes

Programme: Bachelor of Arts (Second Year)

Subject: Hindi

Paper Code: HNC103

Paper Title: हिंदी साहित्य का आदिकाल एवं मध्यकाल: परिचयात्मक अध्ययन

Unit: I

Module Name: सिद्ध काव्य

Module No: 03

Name of the Presenter: Ms. Uma J. Priolkar

Notes :

सिद्ध साहित्य

हिंदी -साहित्य परंपरा में सिद्ध -साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है|मन्त्रों द्वारा सिद्धि प्राप्त करने वाले साधक सिद्ध कहलाये | आदिकालीन धार्मिक -सांस्कृतिक स्थिति का विवेचन करते समय यह देखा है कि बौद्ध धर्म किस प्रकार महायान,मंत्रयान ,वज्रयान,सहजयान आदि रूपों में विकसित हुआ था|

बौद्ध धर्म के वज्रयान तत्व का प्रचार करने के लिए जो साहित्य जन -भाषा में लिखा वह हिंदी के सिद्ध साहित्य की सीमा में आता है | सिद्ध वज्रयानी अथवा सहजयानी ही थे| इनकी संख्या ८४ मानी गयी है| सिद्धों के समय तथा आदि सिद्ध के संबंध में भी काफी मतभेद है| अधिकांश विद्वान् सरहपा को आदि सिद्ध मानते हैं और उनका समय आठवी शताब्दी बताते हैं |उसके बाद लगभग ४०० सौ वर्षों तक सिद्धों की परंपरा चली |सिद्धों में कन्हपा ,शबरपा,लुइपा,मीनपा ,डोम्भिपा,कुक्कुरिपा आदि प्रमुख सिद्ध कवि है | सिद्धों ने शरीर को समस्त साधनाओं का केंद्र तथा पवित्र तीर्थ बताया है|

सिद्धों ने सहज या सरल जीवन पर जोर दिया है| समस्त बाह्य अनुष्ठानों एवं दर्शन का विरोध किया है| गुरुकृपा की कामना की है | गुरु सेवा को महत्त्व दिया है|पुस्तकीय ज्ञान का विरोध किया है|सिद्धों का विश्वास था कि बुद्ध का निवास शरीर में ही है इसीलिए मंदिर या तीर्थ भ्रमण समय और श्रम का अपव्यय है| वर्ण-व्यवस्था ,उँच -नीच ब्राह्मणों धर्म के कर्मकांडों

पर प्रहार किया |वर्ण-व्यवस्था और ऊंच-नीच तथा ब्राह्मण धर्म के कर्मकांडों पर प्रहार करते हुए कहा- ब्राह्मण ब्रह्म के मुख से जब पैदा हुए थे,अब तो वे भी वैसे ही पैदा होते है जैसे अन्य लोग,फिर ब्राह्मणत्व कहाँ रहा? दिगंबर साधुओं को लक्ष्य करते हुए सरहपा कहते हैं__यदि नंगे रहने से मुक्ति मिल जाए तो सियार ,कुत्तों की भी अवश्य होनी चाहिए| केश बढाने से मुक्ति मिलती है तो मयूर उसके सबसे बड़े आधिकारी हैं|

सिद्धों ने मुख्यतः तीन प्रकार का साहित्य लिखा है|

१. नीति तथा आचारमय
२. उपदेशात्मक
३. साधना संबंधी अर्थात रहस्यवादी

सिद्ध साहित्य की प्रमुख विशेषताएं

1) **जीवन की सहजता और स्वाभाविकता में दृढ़ विश्वास:** सिद्ध कवियों ने जीवन की सहजता और स्वाभाविकता में दृढ़ विश्वास अभिव्यक्त किया|धर्माचार्यों ने जीवन पर कई प्रतिबन्ध लगाकर जीवन को कृत्रिम बनाया था|इसीलिए सिद्धों ने सहजमार्ग का प्रचार किया|
2) **गुरु महिमा का प्रतिपादन:** सिद्धों के अनुसार गुरु का स्थान वेद और शास्त्रों से भी ऊँचा है|गुरु की कृपा से ही सहजानंद की प्राप्ति होती है|
3) **बाह्याडम्बरो–पाखंडों की कटु आलोचना:** सिद्धों ने वेद,पुराण,शास्त्र की कटु आलोचना की और पंडितों की खुलकर निंदा की|
4) **रहस्यात्मक अनुभूति**: सिद्ध साहित्य में तंत्र साधना पर अधिक बल दिया गया|
5) **भाषा** :सिद्धों ने अपने साहित्य में अपभ्रंश मिश्रित देशी भाषा का प्रयोग का किया है| उनकी भाषा को संध्या या सन्धाभाषा भी कहते हैं|संध्या का एक अर्थ है–धूपछांही शैली दूसरा अर्थ–है–रहस्यपूर्ण भाषा|
6) **शृंगार और शांत रस :** सिद्धों ने अपना साहित्य शृंगार-एवं शांत रस में दोहा,चौपाई छंदों में लिखा है||सिद्ध अपनी बात सीधे-सीधे न कहकर प्रतीकों के माध्यम से कहते थे| सिद्धों ने प्रतीकात्मक शैली को अपनाया |
7) **साहित्य के आदि रूप की प्रामाणिक सामग्री**: सिद्ध साहित्य आदिकालीन धार्मिक-सांस्कृतिक विचारधारा का एक सही दस्तावेज है|

निष्कर्ष

सिद्ध साहित्य हिंदी साहित्य के लिए एक गौरव का विषय है| सिद्ध कवियों ने कविता की जो प्रवृत्तियाँ आरंभ की,उनका प्रभाव भक्तिकाल तक चलता रहा|रुढियों के विरोध का अक्खड़पन जो हम कबीर की रचनाओं में भी देखते हैं , वह सिद्ध कवियों की देन है| सामाजिक जीवन के जो चित्र उन्होंने उभारे,वे भक्तिकालीन काव्य के लिए सामाजिक चेतना की पीठिका बन गए| कृष्ण-भक्ति के मूल में जो प्रवृत्ति-मार्ग है,उसकी प्रेरणा के सूत्र भी हमें सिद्ध-साहित्य में मिलते हैं|